रोग प्रबंधन

आर्द्र गलनः– इस रोग के प्रकोप से पौध का जमीन की सतह पर स्थित तने का भाग काला पड जाता हैं और पौधे गिरकर मरने लगतें हैं। यह रोग भूमि एवं बीज के माध्यम से फैलता है। नियंत्रण हेतु बीज को 3 ग्राम थाइरम या 3 ग्राम केप्टॉन प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बोयें।

अगेती अंगमारी रोगः– इस रोग में पत्तियों पर हल्के भूरे रंग के धब्बे बनते है जिनका आकार तीव्रता से बढ़ता हैं और पत्तियॉ झुलसने लगती है। प्रभावित पत्तियों को सूर्य की ओर देखने से धब्बें में गोलाकार सकेन्द्री धारियॉ स्पष्ट दिखाई देती हैं। इस रोग के नियंत्रण हेतु 0.3 प्रतिशत कॉपरऑक्सी क्लोराइड या डायथेन–78 का 15 से 20 दिन के अंतराल से छिड़काव करें।

जीवाणु झुलसा रोगः– इस रोग में पौधे खेत में हरे के हरे मुरझाकर सूख जाते हैं। इसका प्रकोप पौधे को किसी भी अवस्था में हो सकता है। इस रोग के नियंत्रण हेतु रोगरोधी जातियॉ जैसे अर्का आभा एवं अर्का आलोक को लगाना चाहिए एवं ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करना चाहिए।

पर्णकुचन रोगः– पर्णकुचंन रोग में पौधों के पत्ते सिकुड़ कर मर जाते है तथा छोटे व झुर्रीयुक्त हो जाते हैं। इन रोगो को फैलाने में कीट सहायक होते हैं, जिनके नियंत्रण हेतु बुवाई से पूर्व कार्बोयूरॉन 3 जी 8 से 10 ग्राम प्रति वर्ग मीटर के हिसाब से भूमि में मिलावें। पौध रोपण के 15 से 20 दिन बाद डायमिथोएट 30 ई.सी. 1 मिली. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

––00––

छत्तीसगढ़ संवाद

छत्तीसगढ़ कामधेनु विश्वविद्यालय

कृषि विज्ञान केन्द्र
अंजोरा दुर्ग

टमाटर में रोग–कीट प्रबंधन

संकलन एवं संपादक
डॉ. एस.के.थापक
डॉ. धीरेन्द्र भोसले
श्री उमेश कुमार पटेल
श्री रोशन लाल साहू

मार्गदर्शक
डॉ. पी.एल. चौधरी
निदेशक विस्तार शिक्षा
छ.ग. कामधेनु विश्वविद्यालय, दुर्ग

संरक्षक
प्रो. यू के मिश्र
कुलपति
छत्तीसगढ़ कामधेनु विश्वविद्यालय, दुर्ग